श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

जय बोलिये

मुनिव्रत पालक, मुनिव्रत दाता,
मुनिव्रत रक्षक, परम प्रमाता,
संकटमोचक,
विघ्न विनाशक,
मंगलकारी, कष्ट निवारी,
उपकारी,
सर्व सौख्य कर्त्ता,
सुख-शांति के सृजेता
परमपूज्य
श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : हरि भज लो हरि भज लो....)

प्रभु भजलो प्रभु भजलो, समय प्रभु के भजन का है।
करो भक्ति करो भक्ति, मुनिसुव्रत प्रभु की जय॥

प्रभु की जय सतत गूँजे, जिन्हें सुर देव भी पूजें।
उन्हीं का नाम लेकर के, किसे भक्ति नहीं सूझे॥
उन्हीं का नाम साँचा है, उन्हीं का दर चमन सा है।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 1॥

हुये प्रभु जब दिगम्बर तो, झुके चरणों में भू-अम्बर।
करें क्या ग्रह-परिग्रह फिर, जहाँ कोई न आडम्बर॥
उन्हीं का दर्श पाकर के, हमारा मन मगन-सा है।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 2॥

कभी आतम-चिदातम की, ललक में मात खा बैठे।
मिली आतम-चिदातम ना, तभी तेरे निकट बैठे॥
तुम्हें अपना बना करके, दिखा है मोक्ष का आलय।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 3॥

तुम्हारी जो शरण पाते, उन्हें ना विघ्न कष्ट आते।
नजर हम पर करो स्वामी, हमें क्यों आप तड़पाते॥
मुनिसुव्रत प्रभो दे दो, 'मुनिसुव्रत'-श्रमण को जय।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 4॥

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुए, मन की अखियाँ खोल॥

(शंभु)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन !, हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आई टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिए, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिए।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्!, अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाए।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥
भव-भव का संताप नशाने, यह चंदन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

कहीं-कहीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥

पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाए।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुए।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुए॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को, प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

प्राणत नामक स्वर्ग त्याग जब, श्रावण कृष्णा दूज रही।
सोमा जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब वैशाख कृष्ण की दशमी, नगर राजगृह जन्म लिया।
श्री सुमित्र राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तज वैशाख कृष्ण दशमी को, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तिथि वैशाख कृष्ण नवमी को, घाति कर्म सब नशा दिए।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किए॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाए।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बारस फाल्गुन कृष्ण रात में, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, हम पाएँ सब यही दशा॥

अष्ट कर्म का बन्धन सहना, नाथ हमारा मिट जाए।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आए श्री भगवान्॥ 1॥

बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ 2॥

आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥
चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाए केवलज्ञान।
समवसरण में हुए सुशोभित,दिए मुक्ति का ज्ञान॥ 3॥

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाए, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ 4॥

आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥

नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ 5॥
कथा आपकी व्यथा नशाए, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥6॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

(10 सम्यक्त्व वर्णन)

(लय : माता तू दया करके .....)

कोई न हमारा है, हमको प्रभु अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥
अपना सबको माना, कथनी सबकी मानी।
दुख भोगा पर हमने, जिनवाणी ना मानी॥
हितकर जिनवर उपदेश, अब हमको अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 1॥

ॐ ह्रीं कुज्ञाननाशक-आज्ञासम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...॥ 1॥

हमने शिवपथ पाया, पर चले कुपथ पर हम।
सो भटके अब तक पर, नहिं चले सुपथ पर हम॥

अब शिवपथ मंगलमय, श्रद्धा से अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 2॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकुमार्गनाशक-मार्गसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥2॥

दुखकर साहित्य सुना, त्यों श्रद्धा मन भायी।
अब पुरुष शलाका के, चारित्र सुनो भाई॥
चारित्र कथन सुनकर, श्रद्धा उर में लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 3॥

ॐ ह्रीं हिताहितविज्ञानदायक-उपदेशसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥3॥

नहिं सद्गुरु पहचाने, नहिं सद्चर्या जानी।
अब मुनिचर्या वाले, सद्ग्रन्थ सुनो प्राणी॥
सद्ग्रन्थों को सुनके, श्रद्धा को उपजाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 4॥

ॐ ह्रीं भयातङ्कनाशक-सूत्रसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥4॥

करणानुयोग के ग्रन्थ, या बीज सूत्र सुन के।
जो श्रद्धा लेती जन्म, वो पाप हरे मन के॥
वह बीज नाम वाला, सम्यग्दर्शन पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 5॥

ॐ ह्रीं संसारमूलहेतुनाशक-बीजसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥5॥

जीवादिक तत्त्वों का, संक्षिप्त रूप सुनके।
जन्मी श्रद्धा हरती, सारे दुख आतम के॥
सम्यग्दर्शन संक्षेप, हम भक्तों को पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 6॥

ॐ ह्रीं पापवर्धकभावनाशक-संक्षिप्तसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥6॥

जो भव्य जीव सुनते, विस्तृत श्री जिनवाणी।
उससे जो श्रद्धा हो, वह होती कल्याणी॥
विस्तार नाम का वह, सम्यक्त्व हृदय लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 7॥

ॐ ह्रीं पुण्यवर्धक-विस्तारसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥7॥

बिन वचनों के विस्तार, तत्त्वार्थ ग्रहण करना।
तब होता जो विश्वास, वह श्रद्धा उर धरना॥
वह अर्थ नाम धारी, सम्यग्दर्शन जाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 8॥

ॐ ह्रीं परमार्थदायदायक-अर्थसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥8॥

श्रुतकेवलि का सम्यक्त्व, अवगाढ़ कहाता है।
सब तत्त्व द्रव्य जाने, तम मोह नशाता है॥
अवगाढ़ नाम का वह, सम्यक्त्व श्रेष्ठ माना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 9॥

ॐ ह्रीं पूज्यदृष्टिप्रदायक-अवगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥9॥

केवलि जिनवर का जो, सम्यक्त्व रहा न्यारा।
है वही परम-अवगाढ़, सम्यक्त्व महा प्यारा॥
वह साधन मुक्ति का, प्रभु वंदन से पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 10॥

ॐ ह्रीं रोगपातनाशक-परमावगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥10॥

(तीन प्रकृतियाँ) (चौपाई)

देव-शास्त्र-गुरु जो ना माने, शुद्धातम को ना पहचानें।
वह मिथ्या का संकट हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वप्रकृतिरूप-महासंकटविनाशनाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥11॥

मिथ्यासम्यक् जब मिज जाते, दहि गुड़ जैसे मिश्र कहाते।
वह सम्यक् मिथ्या दुख हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं सम्यक्मिथ्यात्वप्रकृतिरूप-घोरोपद्रवविनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥12॥

देवशास्त्रगुरु को जो पूजे, परमातम आतम को खेजे।
वह श्रद्धा हम सक्यक् करलें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं सम्यक्प्रकृतिरूप-महानन्दकर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 13॥

(चार कषाएँ)

अनन्तभव से जो बँधवाती, अनन्तानुबन्धी कहलाती।
पत्थर सम वह कषाय हरलें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धीकषायसम्बन्धी-महावेदनाहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥14॥

छह माहों तक जो तड़पाए, अप्रत्याख्यान वो कहलाए।
मिट्टी सम वह कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं अप्रत्यख्यानावरणीकषायसम्बन्धी-महापीड़ाहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥15॥

पंद्रह दिन तक जो तड़पाए, प्रत्याख्यान वही कहलाए।
धूली सम वह कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणीकषायसम्बन्धी-महाकष्टहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥16॥

अंतरर्मुहूर्त तक जो तड़पाए, संज्ज्वलन कषाय कहलाए।
जल रेखा सम कषाय हर लें, नमोऽस्तु सुव्रत प्रभु को कर लें॥

ॐ ह्रीं संज्ज्वलनकषायसम्बन्धी-महाविघ्नहर्त्ता श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥17॥

(चार उपसर्ग) (ज्ञानोदय)

शीत ग्रीष्म वर्षा मौसम के, जो होते उपसर्ग कभी।
उनके संकट दुख सहने में, योग्य नहीं है जीव सभी॥
प्रकृति कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं प्रकृतिकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 18॥

शापानुग्रह बल के कारण, देवोंकृत उपसर्ग हुए।
दिल दहला देने वाले वे, दृश्य देखकर खेद हुए
देवों कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं देवकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 19॥

कभी पालतू कभी फालतू, जानवरों के द्वारा जो।
जीवमात्र के हृदय विदारक, हों भय दुख संहारा जो
तिर्यंच कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 20॥

जियो और जीने दो वाले, भूले मंत्र अहिंसक जो।
सो अज्ञान कषायों द्वारा, मानव बनते हिंसक वो

मनुष्य कृत उपसर्ग हटें सब, सुव्रत प्रभु के वन्दन से।
अर्घ्य चढ़ा हम करें नमोऽस्तु, सादर आत्म समर्पण से॥

ॐ ह्रीं मनुष्यकृत-उपसर्गविनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ॥ 21 ॥

(पूर्णार्घ्य)

कर्मों के फल सभी भोगते, तो हमको छोड़ेंगे क्या?
किंतु हमारी यही भावना, जीवमात्र का होए भला॥
संकट दुख उपसर्ग नहीं हों, सिद्धालय सम विश्व बनें।
अर्घ्य चढ़ा सो सुव्रत प्रभु को, नमोऽस्तु अपने घने-घने॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

जाप्यमंत्र : **ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।**

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सूर्य चाँद जब तक रहें, गिरि सागर में नीर।
तब तक सुव्रतनाथजी, जय जयवंत सुवीर॥

(सुविधा)

जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत नाथ।
आप बीसवें तीर्थंकर हो, काम बीसवाँ हाथ॥
काम नहीं उन्नीस सुहाया, कर डाला इक्कीस।
मानस तल पर तभी विराजे, सिद्धालय के ईश॥ 1॥
मोहकर्म-तम विघ्न निवारक, तारणतरण जहाज।
जगहितकारी मंगलकारी, गुणधारी जिनराज॥
आपदहारी संपदकारी, अतिशयवान् जिनेश।
कुगतिनिवारी शिवसुखकारी, मुक्ति रमा परमेश॥ 2॥
कण-कण गुण-गण मणिमय पूजित, रहो सदा जयवंत।
जो भी पूजे नाम तिहारा, नहीं रहे भयवंत॥
हम भी छोटे भक्त तुम्हारे, अज्ञानी हैं बाल।
भक्ति सहित फिर भी गुण गाते, छूटे भव जंजाल ॥ 3॥

बस इतना सामर्थ्य हमारा, हुए हँसी के पात्र।
दोष क्षमाकर पावन कर दो, भक्तों का मन गात्र॥
ज्ञान आपका ध्यान आपका, जपें आपका नाम।
शीश झुकाएँ गाथा गाएँ, जीवन में अविराम॥ 4॥
बदले में बस इतना चाहें, इच्छा होवे पूर्ण।
विश्वशान्ति हो, प्रेमभाव हो, सुखी जगत् संपूर्ण॥
भय आतंक रहित हो दुनियाँ, पापों से हो दूर।
धर्म भावना समझ हिताहित, सेवक बनें जरूर ॥ 5॥
तजे उपेक्षा और अपेक्षा, मंदिर हो संसार।
दया प्रेम करुणा हो मन में, मंगलमय आचार॥
रोग गरीबी लूट मार ये, होवें सकल समाप्त।
प्रचार प्रसार हो मूल धर्म का,समझें प्राणी आप्त॥ 6॥
कर्त्तव्यों का हो परिपालन, माँगे ना अधिकार।
उपदेशों की शिक्षा पालें, गौ-बछड़े सा प्यार॥
सीमाओं के पार न जाएँ, सज्जन बनें महान्।
भार बनें ना हम गैरों पर, बस इतना अरमान॥ 7॥
दिया आपने भक्त जनों को, मुँह माँगा वरदान।
योग्य लगे तो झोली भर दो, हम पाएँ सद्ज्ञान॥
धर्म क्रांति घर-घर हो जाए, हरियाली सुख छाँव।
दूर भ्रांति सब की हो पाएँ, मुक्ति रमा का गाँव॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा.....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री मुनिसुव्रतनाथविधान सम्पूर्णम्॥

है 'बामौरकलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, मुनिसुव्रत विधान॥
दो हजार चौदह रवि, पंचम तिथि दिन तीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : चंदा तू ला रे....)

जय हो! हे सुव्रतस्वामी!, तुमको शतबार नमामि,
चरणों में झुकते हैं हम भारती॥
हो स्वामी, हम सब उतारें तेरी आरती॥

मुनिसुव्रत प्रभु कष्ट हरो, स्वामी जय प्रभु कष्ट हरो
हम हैं चरण पुजारी तेरे[2], हमको नहिं विसरो।
हो स्वामी, नीली सी सुंदर काया, साँवलिया रूप सुहाया,
हमको तुम्हारी करुणा तारती... हो स्वामी.....॥

आप बीसवे तीर्थंकर हो, करते इक्कीसा[2]
किये राजगृह का संचालन[2], अंतर शांति भरो।
हो स्वामी, सुमित्र-सोमा के नंदन, तुम ही परमातम भगवन्,
तुमको भक्तों की भक्ति पुकारती....हो स्वामी....॥

नाम आपका तारणहारा, दुख संकटहारी[2]
हम भी चरण शरण में आये[2], हम पर कृपा करो।
हो स्वामी, हमको क्यों रोता छोड़ा, बोलो क्यों मुखड़ा मोड़ा,
दुखियों की अर्जी सुनलो सारथी.... हो स्वामी....॥

चाह नहीं कुछ पर वस्तु की, तुम्हें देखकर के[2]
मुनिसुव्रत को 'सुव्रत' माँगे[2], इच्छा पूर्ण करो।
हो स्वामी, हम पर तुम नजरें कर दो, आतम से झोली भर दो,
नजरें ही नैया को उतारती.... हो स्वामी....॥